Gyanvividha, Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025 : PP-116-119

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025
Page No.- 116-119
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

1. वर्षा रानी
शोध छात्रा, हिन्दी,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

2. डॉ. संध्या पाण्डेय
वरीय सहायक प्राध्यापक,
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :

वर्षा रानी
शोध छात्रा, हिन्दी,
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

मृदुला सिन्हा की कहानियाँ : एक अनुशीलन

मृदुला सिन्हा (17 नवम्बर, 1942 - 18 नवम्बर, 2020) साहित्य और राजनीति में समान रुप से सक्रिय रही हैं। कथा लेखन, पत्रकारिता और स्त्री विमर्श के क्षेत्र में इनका, योगदान अविस्मरणीय है। इनका जन्म बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला अन्तर्गत छपरा गाँव में हुआ था। एम0 ए0 करने के के बाद कुछ वर्षों तक मोतीहारी के श्रीकृष्ण महिला कॉलेज में उन्होंने अध्यापन किया और उसके बाद वे सक्रिय राजनीति में आ गयीं। उनके पति डॉ. रामकृपाल सिन्हा रामदयालु सिंह महाविद्यालय में प्राध्यापक थे। वे सांसद हुए और केन्द्र में मंत्री भी। मृदुला जी ने 'पाँचवाँ स्तंभ' नामक एक साहित्यिक पत्रिका भी निकाली। उपन्यास, कहानी और निबंध लेखन उनकी मुख्य विधाएँ हैं। 'साक्षात्कार', 'ढाई बीघा जमीन', 'देखन में छोटन लगे', 'स्पर्श की तासीर' उनके महत्वपूर्ण कहानी-संग्रह है। प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा उनकी प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह : 'मृदुला सिन्हा की लोकप्रिय कहानियाँ' 2018 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 18 कहानियाँ संकलित हैं, जिनके शीर्षक उधर का सूरज, और उसी क्षुण, एक दीये की दीवाली, अचार का घड़ा, घर का वैरागी, जब जब हो हीं धरम के हानि, मुसाफिर काकी, स्पर्श की तासीर, शीशा फुआ, दत्तक पिता, अनावरण, औलाद के निकाह पर बेनाम रिश्ता, कटे हाथ में हथियार, सहस्त्रपूतों वाली, रद्दी की वापसी, टिफिन बॉक्स, विमलता बिलगाव।

अपनी कहानी यात्रा यात्रा के संबंध में उन्होंने लिखा है- "मेरे अंदर की संवेदना आसपास घटती घटनाओं और चलते-फिरते पात्रों की स्मृति सहेज लेती थी और उन्हीं प्रसंगों और पात्रों को लेकर कहानियों बनती गई। पढ़ाई-लिखाई से फुरसत नहीं हुई। एम. ए. की परीक्षा देकर जब बैठी थी तो दो कहानियाँ लिखी थी। मेरी पहली कहानी 'कादंबिनी'

(1978) में छपी। पाठकों की प्रशंसा मिली। फिर क्या था, कहानियाँ लिखने का सिलसिला प्रारंभ हो गया। फिर तो एक रात्रि को चार घंटे में दो कहानियाँ भी लिख गई। सबकी सब कहानियों अपने परिवेश से उठाई घटनाओं पर आधारित होती थीं। ग्रामीण जीवन पर लिखी कहानियों अधिक आईं। उसके बाद तो मेरी कहानियाँ पढ़ने वाले लोग स्वयं आकर अपनी कहानियाँ सुनाने लगे। कहते-"मेरी भी कहानी लिख दो।" यों तो 1978 में एक कथा-संग्रह 'साक्षात्कार' प्रभात प्रकाशन ने प्रकाशित कर दिया था, लेकिन 1982 में 'सप्ताहिक हिंदुस्तान' में प्रकाशित कहानी 'और उसी क्षण', जो मेरी माँ की कहानी थी, को बहुत प्रशंसा मिली।"[1]

मृदुला सिन्हा की कहानियों में भाषा जीवन्त है चरित्र अत्यंत स्वाभाविक। 'उधार का सूरज' कहानी में प्रवासी युवक का चित्रण हुआ है। कहानी का यह प्रारंभ कितना सजीव और कौतुहलपूर्ण है- "मुझसे प्रकाश ने विशेष आग्रह किया था- 'इस बार इंडिया से मेरी माँ के हाथ का बना आचार, पेड़ा या बेसन के लड्डू मत लाना। अब तो मैं विद्यार्थी नहीं रहा। नौकरी करता हूँ। फ्लैट भी खरीद लिया है। तुम मेरी माँ को ही ले आना, ताकि मैं उनके हाथों का बना खाना जी भरकर खाता रहूँ।'

'क्यों, शादी ब्याह नहीं करोगे ? तुम्हारी माँ तो जाते ही मुझसे यही पूछेगी, क्या जवाब दूँगी, यह तो बताओ ?' मैने अपनी समस्या रखी थी। 'कह देना, अगले साल कर लूंगा। अभी नई नौकरी है।' 'अमरीकन लड़की से या अ अ अ अ अ।'

'अरे ! माँ तो इतने से ही खुश हो जाएगी। लड़की फिर देखी जाएगी। तुम लेकर तो आओ। तुम गाँव चले जाना। तुम्हें अच्छा लगेगा। मेरा गाँव पटना से मुजफ्फरपुर और फिर वहाँ से.....।"[2]

इस कहानी में देश प्रेम का सार्थक विनियोग हुआ है। कहानी के अंत में प्रवासी युवक-युवती अपने देश आने का निश्चय करते हैं। शादी के लिए यह अनिवार्य शर्त होती है। कहानी का यह अंत द्रष्टव्य है- "और अर्द्धरात्रि को बिछावन पर करवटें बदलती मैं अपनी शर्त को पुख्ता करती रही। शादी के लिए मेरी एक शर्त हो होगी – 'इंडिया लौटने की शर्त। आठ कमरों के उस वीरान घर में दीया जलाने की शर्त। अँधेरे में औंधी पड़ी माँ के आँचल में प्रकाश लौटाने की शर्त। प्रकाश की जरूरत तो अब इंडिया को है, अमरीका को नहीं। पूरब को उसका सूरज लौटाने की शर्त। पश्चिम पर ऋण है पूरब का। सूरज को लौटाकर पश्चिम को ऋण - मुक्त कराने की शर्त।"[3]

मृदुला सिन्हा जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध रहीं। इस दल के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से प्रभावित रही। इसकी झलक इस कहानी में मिलती है। उनकी एक प्रतिनिधि कहानी है-" और उसी क्षण"। यह कहानी भारतीय परिवार की सहजता और सहृदयता की कहानी है। भारतीय नारी दो परिवारों को जोड़ती है।। विवाह के बाद मायका का मोह बना रहता है किन्तु ससुराल में अपने दायित्व का निर्वहन करने के कारण वह अपने मोह को दवा के रखती है। मायके जाने के लिए पति की अनुमति लेने के लिए उसे अवसर की तलाश रहती है। पति की इच्छा जाने देने की नहीं होती है।

भारतीय समाज के सच को इस कहानी में उजागर किया गया है। कहानी के प्रारंभ में ही यह सच इस तरह सामने आता है- "एक सप्ताह से मन खिन्न हो उठा था। मायके जाने का विचार अकस्मात जागा। खिन्नता किंचित् कम हुई। पर अपने मन में कोई बहाना जमा नहीं। उन्हें कैसे बताऊँ ? पिछले बीस वर्षों से बहाना ही तो बनाना पड़ता रहा है। अब कभी छपरा जाने को मन मचलता, इन्हें मनाने में ही दो-चार दिन निकल जाते। 'तुम्हें इतनी जल्दी क्या पड़ी रहती है,

मायके जाने की? कल ही तो तुम्हारे पिताजी आए थे, पिछले सप्ताह तो माँ आई थी.....।'

ये प्रश्न हाजिरजवाब पत्नी की भी जबान बन्द कर जाते। सचमुच, क्यों जल्दी रहती थी मुझे ? पिताजी के सप्ताह में एक, दो या कभी-कभी तीन चक्कर भी लग जाते। माँ भी आ जातीं। कभी डॉक्टर को दिखाने शहर जाना है, तो कभी कोई सिनेमा-सर्कस आया है। कभी बेटी को ही देखे बहुत दिन हो गए। माँ को भी पिताजी से अनेक बहाने बनाने पड़ते थे। वह तो पिताजी थे, जो माँ को बेटी से मिलने की अबोली बेकली को परदानशीन ही रहने देते और उन्हें शहर लाकर मुझे मिला दिया करते।"[4]

'एक दीये की दीवाली' कहानी में सामाजिक वैषम्य का चित्रण हुआ है। और अन्त में लेखिका की करुणा की व्यंजना भी- "करोड़ों रुपए फूंककर मनाई दिल्ली वालों की दीपावली के नीचे उसकी माय की दीया-बती कितनी छोटी पड़ी थी, इसका न आश्चर्य, न गम था मुझे। उसकी स्थिति देखकर गम था तो उसकी 'माय' का मम्मी के आगे छोटी पड़ने का। मैं कभी नहीं चाहती थी, उसकी माय मम्मी से पराजित हो जाए। गणेश की माय तो माय थी। उसके लिए अपराजिता। उसने एक ही दीये की दीपावली मनाई तो क्या !"[5]

'अचार का घड़ा' कहानी ममता को रेखांकित करनेवाली कहानी है। माँ की ममता अपनी सभी संतानों के प्रति समान होती है। फिर भी सब को यह लगता है कि दूसरे को कुछ अधिक मिल रहा है। इस कहानी में अवसंगत हो रही पीढ़ी का भी वर्णन मिलता है। ईआ के चरित्रांकन में लेखिका को पूरी सफलता मिली है। ईआ के अंतिम समय का यह चित्रण कितना सजीव है – 'ईआ की साधना में दिन-प्रतिदिन कमी आती गई। शरीर साथ नहीं देता था। अपने स्थान पर बैठकर चूल्हा सुलगाती भाभी या नौकरानी से भी ईआ उतने ही मनोयोग की अपेक्षा रखतीं। खटिया पर पड़ी-पड़ी चिल्लाती रहतीं। शनैः शनैः शांत हो गई। और जिस दिन के चिरमौन धारण कर अनंत साधना में लीन हुई, सब उनके लिए रो- चिल्ला रहे थे। साँवले स्वरुप पर शांत, निर्विकार भाव मानो जँच रहे हों। एक सुहागन को अंतिम बार दुल्हन की तरह सजाया गया। पोती - नातिन ने मिलकर श्रृंगार किया। लाल साड़ी, लाल बड़ी सी बिन्दी, सन की तरह सफेद बालों के बीच बनी माँग में चौड़ी लाल लकीर, पाँवों में आलता, माँ का वैसा रुप निरख बिलख उठे बाबूजी। गीता के सारे संदेश उनके रुदन - स्वर के साथ बिखर गए। ईआ के निर्जीव शरीर से आसक्त होते बाबूजी को देखती उपस्थित आँखों के अश्रु सुख गए।"[6]

'घर का वैरागी' इनकी प्रतिनिधि कहानी है। इस कहानी की कनक लता अपने पति को अपने व्यवहार और सेवा भाव से राग की ओर उन्मुख करती है। कहानी का प्रारंभ एक गहरे जीवन बोध से होता है- "मना-मनाकर थक गई थी कनक लता। पति पर उसके मान-मनौवल का कोई असर नहीं हुआ तो उसने हरि किशोर जी को, जिन्हें पच्चीस वर्षों से अपना मुँहबोला भाई बना रखा था, बुलावा भेजा। प्रथम तो हरिकिशोर जी ने कनकलता को ही उसके पति के हठी स्वभाव के कई प्रसंग याद दिलाने प्रारंभ कर दिए। फिर कनकलता के मुख पर तिर आई निराशा को सहलाते हुए बोले- 'तुम्हारी खातिर एक बार बात करके देखता हूँ। मेरी समझ से तो तुम दोनों को अब बेटे के पास जाकर रहना चाहिए। आज उन्हें तुम्हारी जरूरत है। कल तुम्हें भी उनकी जरूरत पड़ने ही वाली है। आखिर बुढ़ापा बिना बच्चों के सहारे के बिताया जा सकता है क्या ? जवानी में पेड़ लगाए जाते हैं, ताकि बुढ़ापा उसकी छाया में काटा जाए। मुझे देखो, जिन्दगी भर मेरे इशारे पर परिवार के सब सदस्य नाचते रहे, आज मैं अपने बेटे के इशारे पर रेंगता हूँ। हस्तांतरण तो करना ही पड़ता है। धन- दौलत, घर-

गृहस्थी के साथ परिवार का नेतृत्व भी हस्तांतरित हो जाता है और ऐसे ही होता है घर में वानप्रस्थी होना। इसे जो जितना पहले स्वीकार कर ले, वहीं सुखी।"[7]

कहानी के अंत में कनक लता अपने पति मोहन के साथ शहर में रहनेवाले अपने बहु- बेटा के घर से गाँव लौटना चाहती है। बेटा अनिल चाहता है कि माँ गाँव जाए और पिता उनके साथ रहे। इसपर मोहन बाबू कहते है- "न तुम न तुम्हारी माँ ? मैं जाऊँगा गाँव। खेत-खलिहान और बागीचे की व्यवस्या कर वापस आ जाऊँगा। यहीं रहूँगा तुम लोगों के साथ। लेकिन दो-चार दिन खा-पी लेने दो। पोते के साथ खेल तो लेने दो।"

कनक लता ने पति के निर्णय में बहू-बेटा को जी भरकर आनंद लेने दिया। फिर बोली, "नहीं, अभी हमारे हाथ-पैर चलते हैं। खेती बारी के संग अपना और भी बहुत कुछ है गांव में। हमजोलियों को कैसे छोड़ें? दो-चार महीने में हम ही आते रहेंगे। और जब हाथ-पैर थक जाएँ से फिर तो.....।"

मोहन बाबू का क्या, उन्हें तो बस अब वही करना है जो कनक लता कहेगी। और उसने कब मना किया है उन्हें घर में रहकर वैरागी बनने से।"[8]

मृदुला सिन्हा जी की कहानी 'जब जब होई चरम के हानि' में लोक जीवन का यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है। वही 'मुसाफिर काकी', 'शीशा फुआ' जैसी कहानियों में महिला मनोविज्ञान की स्पष्ट झलक मिलती है।

मृदुला सिन्हा के अनुभव का संसार अत्यंत व्यापक है। गाँव में उनका जन्म हुआ। ग्रामीण परिवेश ने उन्हें प्रभावित किया। ग्राम्य जीवन की सहजता उनके जीवन और रचनाकर्म में बनी रही। उन्होंने महा-नगरों का यंत्रवत जीवन भी देखा और अजनबीपन भी। उनकी कहानियों में अंचल और महानगर का यथार्थ पूरी जीवंतता के साथ उभरा है। उनकी कहानियाँ आज के समय के यथार्थ को पूरी तीव्रता से रेखांकित करता है। अपने समय सन्दर्भों का गहरा साक्षात्कार उनकी कहानियों में मिलता है। इसीलिए वे लोकप्रिय भी हैं और समकालीन कहानी लेखन में महत्त्वपूर्ण भी।

संदर्भ :

1. 'कथा की अन्तर कथा', मृदुला सिन्हा की लोकप्रिय कहानियाँ, भूमिका, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2018, पृ.-6.
2. 'उधार का सूरज', मृदुला सिन्हा की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ.-13.
3. वही, पृ.-26.
4. 'और उसी क्षण', मृदुला सिन्हा की लोकप्रिय कहानियाँ, पृ.-27.
5. 'एक दीये की दीवाली', वही, पृ.-43.
6. 'अचार का घड़ा' वही, पृ.-49-50.
7. 'घर का वैरागी', वही, पृ.-51.
8. 'घर का वैरागी', वही, पृ.-60-61.

•